बावरा पंछी

नीले नीले आसमान में
वो पंख फैलाकर उड़ता जाए
अपनी मेहनत से दाना चुगकर
सबसे वो खुद को बावरा पंछी सुनता जाए

इधर-उधर से तिनका जोड़कर
वो अकेले अपना घोंसला बनाए
पानी पीकर प्यास बुझाकर
वो अकेले ही मेहनत करता जाए

सूर्योदय के साथ उठकर
वो मधुर गीत गुनगुनाता जाए
नीरस वातावरण में भी जान डालकर
सबसे वो खुद को बावरा पंछी सुनता जाए

इशिका चौधरी

परछाई

चलती रही मैं अंधेरों में
खुद को जान ना पाई
मन अपना भटका कर मैं
खुद को पहचान ना पाई
भ्रम से सत्य की तरफ मुड़कर
मैं प्रकाश की ओर आई
खुद से खुद का रिश्ता जोड़कर
मैं अपनी परछाई को पहचान पाई
सीधा-सीधा मैं चल रही थी
वह आईना दिखा रही थी
मेरी परछाई मुझसे जुड़कर
एक नया रास्ता दिखा रही थी